

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 12

मुरझाया फूल

महादेवी वर्मा

भाग – 3

अभ्यासमाला

कीर्ति बसुमतारी

(उ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में):

1. महादेवी वर्मा की साहित्यिक देन का उल्लेख करो।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(उ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 50 शब्दों में):

1. महादेवी वर्मा की साहित्यिक देन का उल्लेख करो।

उत्तर- महादेवी वर्मा छायावादी काव्यधारा की चार प्रमुख विभूतियों में अन्यतम हैं। उन्होंने अपने काव्य को केवल विरह और व्यक्तिगत दुःख तक सीमित न रखकर उसे लोक-कल्याणकारी करुणा भाव से जोड़ा। इसलिए उनको आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है।

महादेवी वर्मा ने गद्य और पद्य दोनों में महत्वपूर्ण साहित्य रचना की। प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं: नीहार, रश्मि, नीरजा, संध्यागीत, दीपशिखा और यामा। गद्य में स्मृति की रेखाएँ, अतीत के चलचित्र, श्रृंखला की कड़ियां और पथ के साथी जैसे रचनाएं शामिल हैं। उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 'यामा' के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। उनकी काव्य भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली है, जिसमें कोमलता, मधुरता और गेयता जैसे सुंदर गुण विद्यमान हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. खिले फूल के प्रति किस प्रकार सब आकर्षित होते हैं, पठित कविता के आधार पर वर्णन करो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. खिले फूल के प्रति किस प्रकार सब आकर्षित होते हैं, पठित कविता के आधार पर वर्णन करो।

उत्तर- महादेवी वर्मा ने कविता में खिले फूल के प्रति पवन, चंद्रमा, भँवरे और ओस की बूंदों की प्रतिक्रिया को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है। कली अवस्था में पवन उसे गोदी में झुलाता और खेलता है। फूल खिलने पर चंद्रमा अपनी रोशनी से उसकी शोभा बढ़ाता और पवन पंखे की तरह उसे सुलाता है। ओस की बूंदें फूल को सजाती हैं और भँवरे मधु पाने के लिए उसके चारों ओर मंडराते हैं। फूल अपनी सुंदरता और मधुरता से सभी को आकर्षित करता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. पठित कविता के आधार पर मुरझाए फूल के साथ किए जाने वले बर्ताव का उल्लेख करो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. पठित कविता के आधार पर मुरझाए फूल के साथ किए जाने वले बर्ताव का उल्लेख करो।

उत्तर- महादेवी ने मुरझाए हुए फूल के प्रति मनुष्य और प्रकृति के बदलते व्यवहार को विरहानुभूति के भाव से प्रस्तुत किया है। जब फूल खिला हुआ था, तब मनुष्य और प्रकृति दोनों उससे आकर्षित थे। पवन उसे गोदी में लेकर झुलाता, कभी पंखा बनता, चंद्रमा अपनी रोशनी से उसे हँसाता और भँवरे चारों ओर मंडराते थे। लेकिन जैसे ही फूल मुरझाने लगा, उसकी ओर से सभी का ध्यान घट गया।

पवन अब उसे तीव्र झोंकों से जमीन पर गिरा देता है, चंद्रमा उसका ध्यान नहीं रखता, भँवरे नहीं मंडराते, और माली भी उसकी देखभाल नहीं करता। अर्थात, फूल की सुंदरता जब तक बनी रहती है, तब तक उसे प्रेम और आदर मिलता है; मुरझाने के बाद कोई उसे नहीं पूछता।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. पठित कविता के आधार पर दानी सुमन की भूमिका पर प्रकाश डालो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. पठित कविता के आधार पर दानी सुमन की भूमिका पर प्रकाश डालो।

उत्तर- सुमन यानी फूल अपनी सुंदरता और मधु से सबका मन मोहता है। वह सबको खुश करता है और अपने मधु का दान करके भँवरों का हृदय जीतता है। सब कुछ देने के बाद भी यह स्वार्थी नहीं होता। कवि कहते हैं कि अगर फूल की दशा पर कोई दुख नहीं करता, तो मनुष्यों के लिए कौन रोएगा।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ऊ) सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में):

1. कवयित्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ऊ) सम्यक् उत्तर दो (लगभग 100 शब्दों में):

1. कवयित्री महादेवी वर्मा का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत करो।

उत्तर- महादेवी वर्मा आधुनिक हिंदी काव्य साहित्य की प्रमुख छायावादी कवयित्री थीं। उनके काव्य में सर्वव्यापी परम सत्ता के प्रति तीव्र विरहानुभूति झलकती है।

जिस प्रकार मीराबाई ने अपने आराध्य श्रीकृष्ण के विरह में गीत रचे, उसी प्रकार महादेवी वर्मा ने अपने अज्ञात प्रीतम के प्रति भावनाओं में काव्य की रचनाएँ कीं, इसलिए उन्हें आधुनिक युग की मीरा कहा जाता है। उन्होंने अपने विरह और व्यक्तिगत दुःख को लोकहित और करुणा भाव से जोड़ा। उनकी काव्यभाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ीबोली थी, जो मधुर और कोमल थी। महादेवी वर्मा गद्य और पद्य दोनों में दक्ष थीं। उनके साहित्य को समर्पित जीवन के लिए उन्हें पद्मश्री और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. ‘मुरझाया फूल’ शीर्षक कविता में फूल के बारे में क्या-क्या कहा गया है?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. 'मुरझाया फूल' शीर्षक कविता में फूल के बारे में क्या-क्या कहा गया है?

उत्तर- कवयित्री महादेवी वर्मा ने "मुरझाया फूल" कविता में फूल के माध्यम से विरहानुभूति और जीवन के गहरे सत्य को प्रस्तुत किया है। खिला हुआ फूल सभी को आकर्षित करता है। पवन उसे गोदी में लेकर झुलाता, हंसाता और पंखा बनकर सुलाने की कोशिश करता है। चंद्रमा अपनी रोशनी से उसे हंसाता और ओस की बूंदें उसका श्रृंगार करती हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भँवरे मधु पान के लिए उसके चारों ओर मंडराते हैं और माली प्यार से उसकी देखभाल करता है। लेकिन जब फूल मुरझाने लगता है, तो सबका ध्यान घट जाता है। वही पवन उसे झोंकों से गिरा देता है, भँवरे पास नहीं आते और वृक्ष भी उसके खो जाने का दुःख नहीं मनाते। इसीलिए कवि मुरझाए हुए फूल को दुखी न होने की सीख देती हैं और कहती हैं कि इस संसार में सभी स्वार्थी बनाए गए हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. ‘मुरझाया फूल’ कविता के माध्यम से कवयित्री ने मानव जीवन के संदर्भ में क्या संदेश दिया है?



3. 'मुरझाया फूल' कविता के माध्यम से कवयित्री ने मानव जीवन के संदर्भ में क्या संदेश दिया है?

उत्तर- मुरझाया फूल" कविता के माध्यम से महादेवी वर्मा ने मानव जीवन का एक गहरा संदेश दिया है। जैसे खिला हुआ फूल सभी को प्रिय होता है, लेकिन मुरझा जाने पर उसकी कद्र नहीं होती, वैसे ही मानव जीवन भी स्वार्थ से जुड़ा है। जब कोई व्यक्ति स्वस्थ और दूसरों के काम का होता है, तभी उसकी कद्र होती है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

परंतु उम्र या कमजोरी आने पर, जब वह दूसरों के लिए उपयोगी न रह सके, तो उसके दर्द को कोई नहीं समझता। जो फूल सबको खुशी देता है, उसके लिए हमदर्द नहीं जुट पाता। इसी प्रकार, इस स्वार्थी संसार में किसी के दुख में रोने वाला मिलना कठिन है।

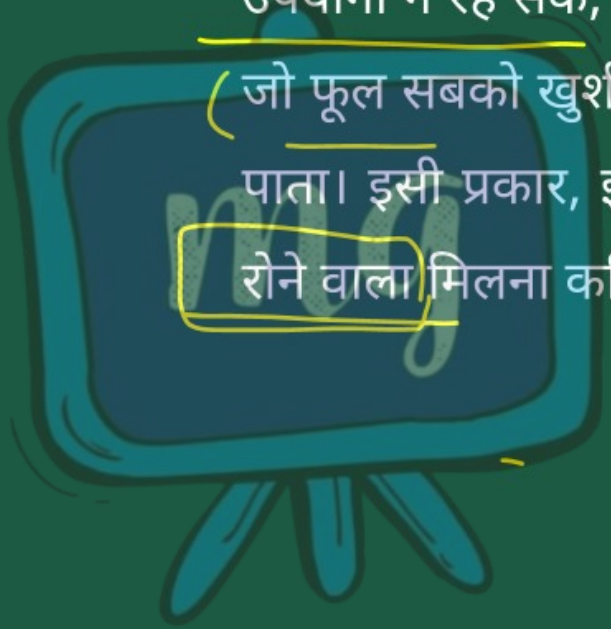

4. पठित कविता के आधार पर फूल के जीवन और मानव जीवन की तुलना करो।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

4. पठित कविता के आधार पर फूल के जीवन और मानव जीवन की तुलना करो।

उत्तर- महादेवी वर्मा की कविता "मुरझाया फूल" में फूल के जीवन के विभिन्न चरणों के माध्यम से मानव जीवन का संदेश प्रस्तुत किया गया है। फूल कली के रूप में पवन की गोदी में झूलता है, प्रकृति उसका श्रृंगार करती है और वह उपवन में खेलता-कूदता है। इसी तरह मनुष्य का बचपन लाड-प्यार और खुशियों से भरा होता है। फूल जब खिलकर सुगंध और मधु फैलाता है, भँवरे उसके चारों ओर मंडराते हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

मानव जीवन में भी समृद्धि और सफलता के समय लोग लाभ लेने के लिए पास रहते हैं। फूल अपना मधु और सुगंध दूसरों के लिए दान करता है, लेकिन मुरझाने पर उसका कोई ध्यान नहीं रखता। इसी प्रकार कुछ मानव दूसरों की सेवा करते हैं, पर अंत में उपेक्षा का सामना करते हैं। कविता यह संदेश देती है कि संसार स्वार्थ पर आधारित है जब तक वो दूसरों के काम आता रहता है उसकी कद्र होती है और बाद में उसे अपने दर्द अकेले ही सहने पड़ते हैं।



कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 12

मुरझाया फूल

महादेवी वर्मा

भाग – 4

अभ्यासमाला

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ई) प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में):

1. 'स्निग्ध किरणें चंद्र की _____ श्रृंगारती थी सर्वदा।'

(ई) प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में):

1. 'स्निग्ध किरणें चंद्र की _____ श्रृंगारती थी सर्वदा।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है। इसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं। इस कविता में कली के फूल बनकर खिलने से मुरझाकर गिरने तक के सफर का खूबसूरती से वर्णन किया गया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या: चंद्रमा की कोमल और स्निग्ध किरणें फूल को हमेशा हंसाती थीं, यानी उसकी शोभा बढ़ाती थीं और उसे सुंदर बनाती थीं। साथ ही ओस की बूँदें जैसे मुक्त जाल के रूप में फूल पर गिरतीं और उसे सजातीं। इससे फूल का श्रृंगार होता और उसकी सुंदरता चारों ओर फैलती। यहाँ कवयित्री ने फूल की कोमलता और प्राकृतिक सजावट के माध्यम से उसकी पूर्णता और आकर्षण को दर्शाया है। चंद्रमा और ओस दोनों ही फूल के जीवन में सौंदर्य और प्रेम का प्रतीक हैं।

2. ‘कर रहा अठखेलियाँ _____ था कभी क्या ध्यान में।’



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. 'कर रहा अठखेलियाँ _____ था कभी क्या ध्यान में।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक-भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा है, जिन्होंने कली के फूल बनने से उसके मुरझाकर, धरा पर गिरने तक के सफर का वर्णन किया है।

व्याख्या: फूल जब कली से फूल बनकर खिलता है और सारे बागीचे की शोभा बन सबका ध्यान अपनी ओर खींचता रहता है तो वह खुद पर इतराता है और उसकी हवा के साथ, भौंरों के साथ अठखेलियां (मस्ती) बढ़ जाती है। उसे आने वाले अपने दुखद अंत का ध्यान नहीं होता। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी अपने जीवन काल की मस्तियों में यह भूल जाता है कि आने वाला समय उनके लिए क्या ला सकता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. ‘मत व्यथित हो पुष्प ..... यहाँ करतार ने।’



3. 'मत व्यथित हो पुष्प..... यहाँ करतार ने।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक' आलोक भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है जिसकी रचयिता हैं महादेवी वर्मा। इस कविता में फूल के खिलने से मुरझाने तक की अवस्था का जीवंत वर्णन किया गया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या: कवयित्री मुरझाए हुए फूल से कहती हैं कि उसे अपनी उपेक्षित स्थिति पर दुखी नहीं होना चाहिए। संसार में सुख और दुख का चक्र निरंतर चलता है और ईश्वर ने इसे स्वार्थपरक बनाया है। जब फूल खिला और सुगंध फैलाता था, लोग उसके पास आते और उसकी सराहना करते थे, लेकिन अब उसका आकर्षण कम होने पर सब भूल गए हैं। यह उसकी गलती नहीं, बल्कि संसार की स्वाभाविक प्रकृति है। निस्वार्थ होने पर भी उपेक्षा मिलना सामान्य है।

4. जब न तेरी ही दशा पर.... हमसे मनुज निस्सार को।'



4. जब न तेरी ही दशा पर.... हमसे मनुज निस्सार को।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है। इसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं। इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि यदि निस्वार्थ फूल के अंत पर भी दुनिया दुखी नहीं होती, तो स्वार्थी मनुष्य के लिए शोक की उम्मीद व्यर्थ है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या: फूल को सांत्वना देते हुए कवि स्वयं (मनुष्य जाति) पर कटाक्ष करते हैं। वे कहते हैं कि जब तुम्हारे जैसे परोपकारी और सुंदर जीव के अंत पर यह संसार चुप है, तो फिर हम जैसे "निस्सार" मनुष्यों के लिए कौन रोएगा? कवयित्री ने यहाँ मनुष्य को 'निस्सार' (सारहीन या तुच्छ) इसलिए कहा है क्योंकि मनुष्य अक्सर स्वार्थ, क्रोध और ईर्ष्या में अपना जीवन बिता देता है।

भाषा-अध्ययन —

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो:

- श्रीगणेश करना-
- आँखों का तारा-
- नौ दो ग्यारह होना-
- हवा से बातें करना-
- अंधे की लकड़ी-
- लकीर का फकीर होना-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भाषा-अध्ययन —

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो:

➤ श्रीगणेश करना-

अर्थ: किसी कार्य की शुरुआत करना।

वाक्यः नये वर्ष की शुरुआत में उन्होंने अपने घर के कामों का श्रीगणेश किया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

➢ आँखों का तारा-

अर्थः बहुत प्रिय या प्यारा व्यक्ति।

वाक्यः प्रत्येक बच्चा अपने माँ-पिता की आँखों का तारा होता है।

➢ नौ दो ग्यारह होना-

अर्थः अचानक भाग जाना या गायब हो जाना।

वाक्यः चोरी पकड़ते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

➢ हवा से बातें करना-

अर्थ: बहुत तेज़ दौड़ना

वाक्य: दौड़ प्रतियोगिता में राहुल का घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

➢ अंधे की लकड़ी-

अर्थ: एकमात्र सहारा

वाक्य: पढ़ा-लिखा और आज्ञाकारी इंसान अपने वृद्ध माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी के समान होता है।"

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

➢ लकीर का फकीर होना

अर्थ: किसी बात को दिमाग में बिठा लेना।

वाक्य: आज के दौर में प्रगति के लिए लकीर का फकीर होना छोड़ना होगा।

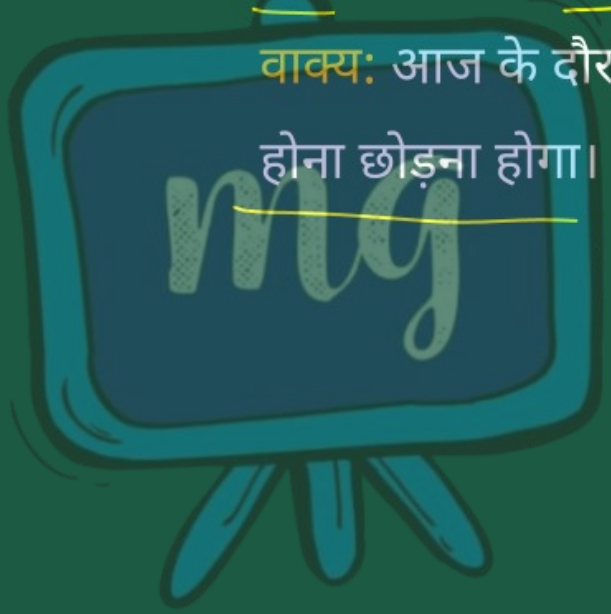

2. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों को गद्य-रूप में प्रस्तुत करो:

(क) खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

2. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों को गद्य-रूप में प्रस्तुत करो:

(क) खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

उत्तरः जब तुम पूरी तरह विकसित होकर सुंदर और कोमल फूल बन गए, तब तुम्हारे रस को पाने के लिए भौरे तुम्हारे चारों ओर मंडराने लगे।

(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥



(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥



(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥

उत्तरः जिस पवन ने तुम्हें अपनी गोदी में लेकर प्यार किया था और तुम्हारे साथ खेला, उसी ने अब अपनी तीव्र झोंकों से तुम्हें जमीन पर गिरा दिया है।

3. लिंग-निर्धारण करो:

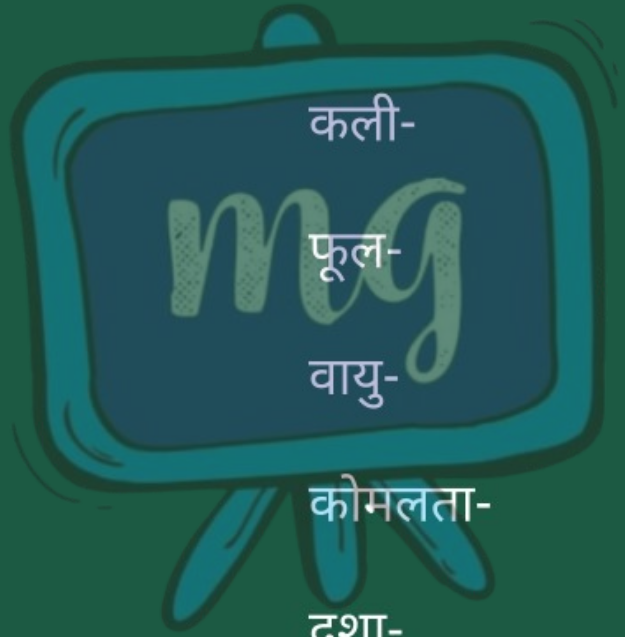

कली-

फूल-

वायु-

कोमलता-

दशा-

शैशव-

किरण-

माली-

सौरभ-

3. लिंग-निर्धारण करो:



कली- स्त्रीलिंग

फूल- पुल्लिंग

वायु- स्त्रीलिंग

कोमलता- स्त्रीलिंग

दशा- स्त्रीलिंग

शैशव- पुल्लिंग

किरण- स्त्रीलिंग

माली- पुल्लिंग

सौरभ- पुल्लिंग

4. वचन परिवर्तन करो:



भौंरा-

अठखेलियाँ-

चिड़िया-

बात-

किरणें-

झोंके-

रेखाएँ-

कली-

4. वचन परिवर्तन करो:

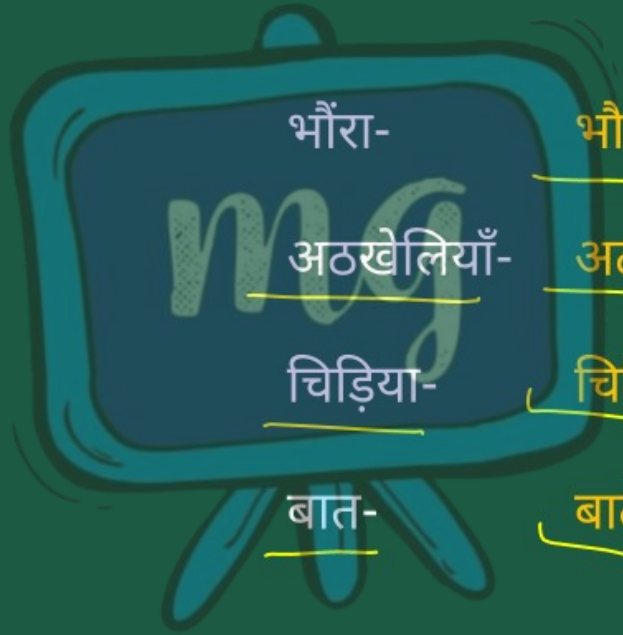

भौंरा-	भौरे	किरणें-	किरण
अठखेलियाँ-	अठखेली	झोंके-	झोंका
चिड़िया-	चिड़ियाँ	रेखाएँ-	रेखा
बात-	बातें	कली-	कलियाँ

5. लिंग परिवर्तन करो:



कवयित्री-

पिता-

प्राचार्या-

देव-

प्रियतम-

पुरुष-

माली-

मोरनी-

5. लिंग परिवर्तन करो:

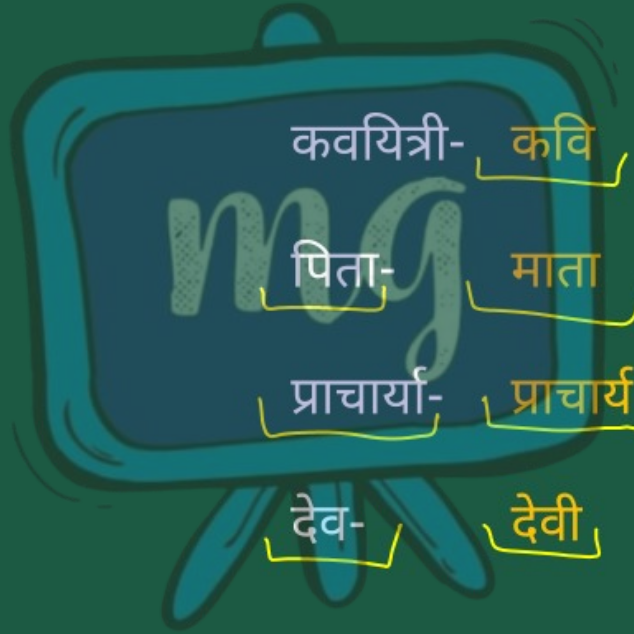

कवयित्री- कवि

पिता- माता

प्राचार्या- प्राचार्य

देव- देवी

प्रियतम- प्रियतमा

पुरुष- महिला

माली- मालीन

मोरनी- मोर

6. कार शब्दांश के पूर्व आ, वि, प्र, उप, अप और प्रति उपसर्ग जोड़ कर शब्द बनाओ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।



6. कार शब्दांश के पूर्व आ, वि, प्र, उप, अप और प्रति उपसर्ग जोड़ कर शब्द बनाओ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।

आ+ कार = आकार-उस डब्बे का आकार गोल है।

वि+ कार = विकार - गुस्से और लालच मन में विकार पैदा कर सकते हैं।

प्र+कार = प्रकार – इस कमरे में किताबें विभिन्न प्रकार की रखी हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उप + कार = उपकार- उसने मेरी सहायता करके मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

अप +कार = अपकार- हमें कभी भी किसी का अपकार नहीं करना चाहिए।

प्रति + कार = प्रतिकार = हमें गलत सूचनाओं का प्रतिकार करना चाहिए।